Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (विज्ञान वर्ग)

भाग – 3 (ब)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. वर्ण विचार	1
2. संधि	11
3. शब्द	30
4. धातु रूप व लकार	37
5. उपसर्ग	41
6. अव्यय	45
7. प्रत्यय	51
8. समास	78
9. कारक व विभक्ति	93
10. वाच्य	99
11. वचन	105
12. विलोम शब्द	116
13. वाक्य निर्माण	123
14. वाक्य परिवर्तन	127
15. पर्यायवाची शब्द	129
16. क्रिया	133
17. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	136
18. छंद	139
19. अपठित पद्यांश	150
20. अपठित गद्यांश	153
21. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	156
22. संस्कृत भाषा कौशल विकास	196
23. मूल्यांकन	206

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अव्यय

संस्कृत के वे शब्द जो सर्वदा एक जैसे ही रहते हैं (जिनमें विभक्ति, वचन तथा लिङ्ग के आधार पर कोई परवर्तन नहीं होता है।) उन्हें अव्यय कहते हैं–

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अव्यय	अर्थ
अचिरम्	शीघ्र ही
यावत्	जब तक
तावत्	तब तक
सहसा	अचानक
श्वः	आने वाला कल
ह्यः	बीता हुआ कल
शनैः शनैः	इस समय
साम्प्रति/साम्प्रतम्/अधुना/इदानीम्	यहाँ
अत्र	बहुत
अत्यन्तम्	आरम्भ या इसके बाद
अथ	निषेधार्थक (योगे तृतीया वि.) पर्याप्त, समर्थ (योगे चतुर्थी विभक्ति)
अलम्	
	आज
	या
	भी
अद्य	नहीं तो
अथवा	इसलिए
अपि	बहुत अधिक

अन्यथा	नहीं
अतः	इधर-उधर
अतीव	समाप्त, ऐसा
अम्	जोर-जोर से, ऊँचे
इतस्ततः	ही
इति	एक बार
उच्चैः	इस प्रकार, ऐसे
एव	क्या
एकदा	परन्तु, लेकिन
एवम्	कब
किम्	कहाँ से
किन्तु	कहाँ
कदा	और
कुतः	दोनों ओर
कुत्र/क्व/क्वचित्	चारों ओर
च	सभी ओर
अभितः	दोनों ओर
परितः	यदि
सर्वतः	देर से, देर तक
उभयतः	वहाँ
चेत्	इधर से, यहाँ से
चिरम्	उसके बाद, वहाँ से
तत्र	फिर भी
इतः	तब

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ततः	तो
तथापि	तो
तदा, तदानीम्	तब तक
तर्हि	चुप
तु	दिन
तावत्	नहीं
तूष्णीम्	नीचे
दिवा	निश्चय ही
न	नहीं तो
नीचैः	फिर
नूनम्	सवेरे
नो चेत्	बाद
पुनः	से, लेकर
प्रातः	किन्तु, लेकिन
पश्चात्	पुराने समय में, पहले
प्रभृति	शाम
परन्तु	कल (आने वाला)
पुरा	कल (बीता हुआ)
	साथ
सायम्	अपने आप
स्वः	अचानक
सह	था, थी, थे
स्वयम्	सब जगह
सहसा	और क्या

श्म	वैसे
सर्वत्र	आपस में
अथ किम्	बाहर
तथा	अक्सर
परस्परम्	हाँ
बहिः	नहीं
	बार-बार
बहुधा	कि
बाढम्	जहाँ
मा	अगर
मुहुर्मुहः, भूयः, वारं वारम्	अगर
यत्	जब तक
यत्र	जहाँ से
यदि	जब
यद्यपि	या/अथवा
यावत्	बिना
यतः	व्यर्थ
यदा	धीरे
वा	नित्य
विना	क्योंकि
वृथा	निश्चय ही
शनैः	थोडा ही
सर्वदा, सदा, सदैव	कभी
हि/यतः/यतोहि	धिक्कार

खलु	रात
ईषत्	बलात्
जातु	नमस्कार, प्रणाम
धिक्	सामने
नक्तम्	
प्रसह्य	
नमः	
परः, परस्तात्, परतः	

वाक्येषु केषाञ्चित् अव्ययपदानां प्रयोगान् पश्यत-

कच्छपः शनैः शनैः चलति।

अचिरं गृहं गच्छ।

अहं श्वः वाराणसीं गमिष्यामि।

ह्य मम गृहे उत्सवः आसीत्।

सहसा निर्णयः न करणीयः।

इदानीम् अहं संस्कृत पठामि।

यद्यपि अद्य अवकाशः अस्ति तथापि अहं कार्यमुक्तः नास्मि।

अथ रामायणकथा आरभ्यते।

अत्र आगच्छ।

अहं कुत्रापि न गमिष्यामि।

कुक्कुरः इतस्ततः भ्रमति।

यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र अग्निः।

अधुना गल्पं न करणीयम्।

नक्तम् दधि न भुञ्जीत।

कक्षायां तूष्णीम् तिष्ठ।

पुरा अशोकः राजा आसीत्।

तौ परस्परम् आलपतः।

अद्य प्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि।

शीघ्र कार्य समापय अन्यथा विलम्बः भविष्यति।

वृथा कलहम् मा कुरु।

यदा अहं गमिष्यामि तदा सः अत्र आगमिष्यति।

ईषत् हसित्वा सः तस्य उपहासं कृतवान्।

अहं त्वाम् भूयोभूयः नमामि।

सः मुहुर्मुहुः किम् पश्यति?

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि यकार एवं तकार वाले, जैसे कि- यद्यपि तथापि, यथा-तथा, यदि-तर्हि, यत्र-तत्र, यावत्-तावत्, यदा-तदा इत्यादि अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग प्रायशः एक साथ ही करना चाहिए, अन्यथा वाक्य अपूर्ण ही रहता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

" प्रतीयते विधीयते इति प्रत्यय: |

* जो मूल प्रकृति [शब्द व धातु] के अन्त में जुड़कर नये पदों का निर्माण करते हैं प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के प्रकार — 3

[1.] कृदन्त प्रत्यय → जो धातु के अन्त में जुड़ते हैं।

[2.] तद्धित प्रत्यय → जो शब्दों के अन्त में जुड़ते हैं।

[3.] स्त्री-प्रत्यय → जो पुल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग शब्दों में परिवर्तित करते हैं।

कृदन्त प्रत्यय — जो धातु के अन्त में जुड़कर नये पदों का निर्माण करते हैं वे कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय सदैव अपशेष अवस्था में प्रयुक्त होते हैं।

* कृदन्त प्रत्ययों की कुछ विशेषताएँ होती हैं। जैसे —

(i) किसी भी धातु के कोई सा भी प्रत्यय लगता है तो उस धातु में गुण अथवा वृद्धि क्रिया होती है।

* धातुओं में सभी जगह गुण क्रिया होती है परन्तु जिन प्रत्ययों में ञ/ण का लोप होता है उन प्रत्ययों में अचो ञ्णिति सूत्र से आवश्यकता अनुसार वृद्धि क्रिया होती है।

NOTE:- लिख्, विद्, मुद्, कृष्, दृश्, भुज्, …… इत्यादि धातुओं में कभी भी वृद्धि क्रिया नहीं होती है।

(ii) धातु के अन्त में हलन्त हो तथा प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण व्यञ्जन हो तो धातु के हलन्त को हटाने के लिए इट् (इ) का आगम हो जाता है।

NOTE:- पंचम वर्ण अर्थात अनुनासिक वर्ण अन्त में हो तो इट् का आगम नहीं होता है

(iii) धातु का अंतिम वर्ण च् / ज् हो तथा प्रत्यय का प्रारंभिक वर्ण त हो तो "चोः कुः" सूत्र से च्/ज् के स्थान पर कु वर्ग हो जाता है। अर्थात च्/ज् के स्थान पर कु हो जाता है।

* "चजोः कु घिण्ण्यतोः सूत्र से घञ् / ण्यत् प्रत्ययों में च्/ज् के स्थान पर [क्/ग्] वर्ग हो जाता है।

NOTE:- "पूज्, अर्च्, क्रच्, शिक्ष् इन चारों धातुओं में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(iv) जिन प्रत्ययों में कु का लोप होता है। उन प्रत्ययों को कित् [कु+इत्] कहा जाता है।

* कित् [कु+इत्] प्रत्ययों की 3 विशेषताएं होती हैं।

(i) धातु में गुण, वृद्धि क्रिया का अभाव

(ii) धातु के अन्तिम पञ्चम वर्ण का लोप

(iii) सम्प्रसारण क्रिया होती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* सम्प्रसारण क्रिया → यण सन्धि के विलोम को सम्प्रसारण कहते हैं अतः
कित [क् + इत] प्रत्ययों में "वह् / वस् / वच् इन तीनों
धातुओं के व के स्थान पर उ हो जाता है।

कृदन्त
प्रत्यय

(1) तुमुन् प्रत्यय → इस प्रत्यय का तुम् शेष रहता है। यह प्रत्यय के लिए
अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।

* इस प्रत्यय में हलन्त युक्त धातुओं में इट् (इ) का आगम होता है

* इस प्रत्यय में धातु के अन्तिम च् / ज् के स्थान पर क् हो जाता है।

* इस प्रत्यय में दृश् धातु के स्थान पर द्रष्, सृज् धातु के स्थान पर स्रष्
व प्रच्छ् के स्थान पर प्रष् हो जाता है। और अन्त में ष्टुत्व सन्धि होजाती है।

| दृश् → द्रष्
| सृज् → स्रष्
| प्रच्छ् → प्रष्

* इस प्रत्यय में वह् / सह् धातुओं में "ह्" का लोप
हो जाता है। तथा प्रारम्भ में "ओ" की मात्रा लग जाती है एवं प्रत्यय के त् के
स्थान पर ढ् हो जाता है।

ह् का लोप व ओ लगाना
वह् → वहन करना → वोढुम्
सह् → सहन करना → सोढुम्
त् के स्थान पर ढ्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उदाहरण

पठ + तुमुन् = पठितुम्
लिख् + तुमुन् = लेखितुम्
हस् + तुमुन् = हसितुम्
रक्ष् + तुमुन् = रक्षितुम्
वद् + तुमुन् = वदितुम्
वस् + तुमुन् = वसितुम्
मुद् + तुमुन् = मोदितुम्
नी + तुमुन् = नेतुम्
जि + तुमुन् = जेतुम्
चि + तुमुन् = चेतुम्
क्री + तुमुन् = क्रेतुम्

भी + तुमुन् = भेतुम्
श्रु + तुमुन् = श्रोतुम्
कृ + तुमुन् = कर्तुम्
गम् + तुमुन् = गन्तुम्
हन् + तुमुन् = हन्तुम्
मन् + तुमुन् = मन्तुम्
दृश् + तुमुन् = द्रष्टुम्
स्रज् + तुमुन् = स्रष्टुम्
प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्

वह् + तुमुन् = वोढुम्
सह् + तुमुन् = सोढुम्
पच् + तुमुन् = पक्तुम्
वच् + तुमुन् = वक्तुम्
मुच् + तुमुन् = मोक्तुम्
त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम्
भुज् + तुमुन् = भोक्तुम्
भज् + तुमुन् = भक्तुम्
पूज् + तुमुन् = पूजितुम्
शिक्ष् + तुमुन् = शिक्षितुम्

[2.] तव्यत् / तव्य प्रत्यय

* इस प्रत्यय का तव्य शेष रहता है। यह प्रत्यय योग्य / चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।

* इस प्रत्यय में हलन्त पुष्य धातुओं में इट (इ) का आगम होता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* इस प्रत्यय में धातु के अन्तिम च/ज के स्थान पर क् हो जाता है

उदाहरण

तव्य / तव्यत्

पठ + तव्यत् = पठितव्य:
लिख + तव्यत् = लेखितव्य:
हस + तव्यत् = हसितव्य:
रक्ष + तव्यत् = रक्षितव्य:
वद् + तव्यत् = वदितव्य:
वस् + तव्यत् = वसितव्य:
मुद् + तव्यत् = मोदितव्य:
नी + तव्यत् = नेतव्य:
जि + तव्यत् = जेतव्य:
चि + तव्यत् = चेतव्य:
क्री + तव्यत् = क्रेतव्य:

भी + तव्यत् = भेतव्य:
श्रु + तव्यत् = श्रोतव्य:
कृ + तव्यत् = कर्तव्य:
गम् + तव्यत् = गन्तव्य:
हन् + तव्यत् = हन्तव्य:
मन् + तव्यत् = मन्तव्य:
दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्य:
सृज् + तव्यत् = स्रष्टव्य
प्रच्छ् + तव्यत् = प्रष्टव्य:

वह् + तव्यत् = वोढव्य:
सह् + तव्यत् = सोढव्य:

पच् + तव्यत् = पक्तव्य:
वच् + तव्यत् = वक्तव्य:
मुच् + तव्यत् = मोक्तव्य:
त्यज् + तव्यत् = त्यक्तव्य:
भुज् + तव्यत् = भोक्तव्य:
भज् + तव्यत् = भक्तव्य:
पूज् + तव्यत् = पूजितव्य:
शिक्ष् + तव्यत् = शिक्षितव्य:

[3.] अनीयर् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का अनीय शेष रहता है। यह प्रत्यय योग्य/चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में गुण क्रिया होती है। तथा स्वरान्त धातुओं में

गुण क्रिया के बाद अस्यादि सन्धि हो जाती है

Ex :-

पठ् + अनीयर् = पठनीय :
लिख् + अनीयर् = लेखनीय :
हस् + अनीयर् = हसनीय :
रक्ष् + अनीयर् = रक्षणीय :
वस् + अनीयर् = वसनीय :
गम् + अनीयर् = गमनीय :
हन् + अनीयर् = हननीय :
मन् + अनीयर् = मननीय :
वच् + अनीयर् = वचनीय :
पच् + अनीयर् = पचनीय :
सुच् + अनीयर् = सोचनीय :
भज् + अनीयर् = भजनीय :
भुज् + अनीयर् = भोजनीय :
त्यज् + अनीयर् = त्यजनीय :
पूज् + अनीयर् = पूजनीय :
शिक्ष् + अनीयर् = शिक्षणीय :
सृज् + अनीयर् = सर्जनीय :
दृश् + अनीयर् = दर्शनीय :
वह् + अनीयर् = वहनीय :
सह् + अनीयर् = सहनीय :
रम् + अनीयर् = रमणीय :

कृ + अनीयर् = करणीय :

अस्यादि सन्धि ↓

नी + अनीयर् = नयनीय :
जि + अनीयर् = जयनीय :
भी + अनीयर् = भयनीय :
क्री + अनीयर् = क्रयणीय :
चि + अनीयर् = चयनीय :
हु + अनीयर् = हवनीय :
श्रु + अनीयर् = श्रवणीय :
भू + अनीयर् = भवनीय :

[4] ल्युट् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "यु" शेष रहता है यूवोरनाकौ सूत्र से यु के स्थान पर अन हो जाता है।

* इस प्रत्यय से बनने वाला शब्द सदैव नपुंसकलिंग होता है अतः अन के स्थान पर अनम् हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* यह प्रत्यय योग्य / चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है

* इस प्रत्यय में गुण क्रिया होती है। तथा स्वरान्त धातुओं में गुण क्रिया के बाद अयादि सन्धि हो जाती है

Ex :-

पठ् + ल्युट् = पठनम्
लिख् + ल्युट् = लेखनम्
हस् + ल्युट् = हसनम्
रक्ष् + ल्युट् = रक्षणम्
वस् + ल्युट् = वसनम्
गम् + ल्युट् = गमनम्
हन् + ल्युट् = हननम्
मन् + ल्युट् = मननम्
वच् + ल्युट् = वचनम्
पच् + ल्युट् = पचनम्
मुच् + ल्युट् = मोचनम्

भज् + ल्युट् = भजनम्
भुज् + ल्युट् = भोजनम्
त्यज् + ल्युट् = त्यजनम्
पूज् + ल्युट् = पूजनम्
शिक्ष् + ल्युट् = शिक्षणम्
सृज् + ल्युट् = सर्जनम्
दृश् + ल्युट् = दर्शनम्
वह् + ल्युट् = वहनम्
सह् + ल्युट् = सहनम्
रम् + ल्युट् = रमणम्
कृ + ल्युट् = करणम्

अयादि सन्धि
↓

=

नी + ल्युट् = नयनम्
जि + ल्युट् = जयनम्
भी + ल्युट् = भयनम्
क्री + ल्युट् = क्रयणम्
चि + ल्युट् = चयनम्
हु + ल्युट् = हवनम्
श्रु + ल्युट् = श्रवणम्
भू + ल्युट् = भवनम्

[5] ण्वुल् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "वु" शेष रहता है "युवोरनाकौ सूत्र" से "वु" के स्थान पर "अक" हो जाता है
* यह प्रत्यय "वाला" अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* इस प्रत्यय में "ण्" का लोप हुआ है। अतः आवश्यकतानुसार इस प्रत्यय में वृद्धि क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में "हन्" धातु के स्थान पर "घत्" हो जाता है।

Ex:-

हन् + ण्वुल्
↓ ↓
हन् वु
↓ ↓
घत् + अक = घातक :

पठ् + ण्वुल् = पाठक :
वद् + ण्वुल् = वादक :
रक्ष् + ण्वुल् = रक्षक :
पूज् + ण्वुल् = पूजक :
शिक्ष् + ण्वुल् = शिक्षक :
वर्ध् + ण्वुल् = वर्धक :
गम् + ण्वुल् = गामक :
मन् + ण्वुल् = मानक :

मुद् + ण्वुल् = मोदक :
मुच् + ण्वुल् = मोचक :
वच् + ण्वुल् = वाचक :
दृश् + ण्वुल् = दर्शक :
नट् + ण्वुल् = नाटक :

कृ + ण्वुल् = कारक :
धृ + ण्वुल् = धारक :
लिख् + ण्वुल् = लेखक :

अमादि सन्धि
↓
नी + ण्वुल् = नायक :
श्रु + ण्वुल् = श्रावक :
भू + ण्वुल् = भावक :

NOTE:- "दा" धातु और "गा" धातु के "ण्वुल प्रत्यय" लगता है तो धातु के "आ" के स्थान पर "ई" हो जाता है। और वृद्धि क्रिया होकर अमादि सन्धि हो जाती है।

Ex:- दा/गा

गा + ण्वुल्
↓ ↓
गी वु
↓ ↓
गै + अक = गायक :

दा + ण्वुल्
↓ ↓
दी वु
↓ ↓
दै + अक = दायक :

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(6) 'तृच' प्रत्यय

इस प्रत्यय का "तृ" शेष रहता है प्रयोग अर्थ में 'तृ' के स्थान पर 'ता' हो जाता है यह प्रत्यय भी वाला अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।

* इस प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण व्यंजन है अतः हलन्त युक्त धातुओं में इट् (इ) का आगम होता है तथा प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण 'त' होने के कारण धातु के अन्तिम च्/ज् के स्थान पर 'क्' हो जाता है

Ex :-

नी + तृच् = नेता
क्री + तृच् = क्रेता
जि + तृच् = जेता
भी + तृच् = भेता
चि + तृच् = चेता
श्रु + तृच् = श्रोता
हु + तृच् = होता
दा + तृच् = दाता

कृ + तृच = कर्ता
गम् + तृच = गन्ता
हन् + तृच् = हन्ता
मन् + तृच् = मन्ता
वच् + तृच् = वक्ता
मुच् + तृच् = मोक्ता
भुज् + तृच् = भोक्ता
भज् + तृच् = भक्ता
त्यज् + तृच् = त्यक्ता

प्रत्यय	शेष	उदाहरण	विशेष
तुमुन्	तुम्	कर्तुम्	
तव्यत्	तव्य	कर्तव्य	
अनीयर्	अनीय	करणीय	
ल्युट्	यु [अनम्]	करणम्	
ण्वुल्	वु [अक]	कारक	
तृच्	तृ [ता]	कर्ता	